Krishna Nand B.A I Hons ①

प्रश्न - स्वप्न से सम्बन्धित युंग तथा एडलर के सिद्धांत की व्याख्या करें।

Ans - प्रारंभ में युंग (Jung) फ्रॉयड के शिष्य और सहकर्मी थे। बाद में फ्रॉयड के विचारों से असहमत होकर अपना अलग सिद्धान्त प्रतिपादित किया, जो विश्लेषणात्मक मनोविज्ञान के नाम से जाना जाता है।

युंग ने स्वप्न के संबंध में भी अपना अलग विचार प्रस्तुत किया है। युंग के स्वप्न-सिद्धांत को प्रायः प्रतीकात्मक स्वप्न-सिद्धांत कहा जाता है। इन्होंने अपने सिद्धांत में फ्रॉयड की कामुक इच्छा के बदले जीने की इच्छा को ही मौलिक इच्छा माना है, जो व्यक्ति की कार्यशीलता का मुख्य आधार होता है। लेकिन जब व्यक्ति की यह इच्छा वातावरण की विभिन्न जटिलताओं एवं अवरोधों के कारण बाधित होती है तब व्यक्ति की कार्यशीलता में प्रतिगमन की क्रिया होती है और उसकी मौलिक इच्छा अचेतन होकर अचेतन अवस्था में चली जाती है। स्वप्न में यही इच्छा वेश बदलकर प्रकट होती है। इस प्रकार स्वप्न केवल कामुक स्वरूप के ही नहीं होते, अपितु अन्य प्रकार की इच्छाएँ भी स्वप्न के माध्यम से प्रकट होती है।

इस ~~प्रकार~~ ~~युंग~~ क्रम में युंग ने स्वप्न का संबंध व्यक्ति के वर्तमान, भविष्य और अतीत तीनों से बताया है अर्थात स्वप्नों में व्यक्ति की वर्तमान जीवन की घटनाओं, भविष्य में होनेवाली घटनाओं एवं अतीत जीवन के अनुभव तीनों की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति होती है।

युंग ने स्वप्नों की व्याख्या के लिए फ्रॉयड की तरह अचेतन के महत्व को तो स्वीकार किया है, पर इन्होंने अचेतन को वैयक्तिक एवं सामूहिक दो वर्गों में बाँटा है। इनके अनुसार वैयक्तिक अचेतन में व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन के अर्जित अनुभव, विचार या भाव रहते हैं, जबकि सामूहिक अचेतन में पूर्वजों से प्राप्त संस्कारों के अवशेष अथवा उनकी स्मृतियाँ संचित रहती है। युंग के अनुसार स्वप्नों में अचेतन के दोनों प्रकारों की संचित इच्छाएँ या अनुभव प्रतीकों के रूप में प्रकट होते हैं।

युंग ने अपने सिद्धान्त में प्रतीकों के

(Sexual intercourse)(रति क्रिया)

Krishna Nand B.A.I Hons (2)

महत्व को भी स्वीकार किया है, पर इनके अनुसार प्रतीकों के अर्थ सार्वजनिक नहीं होते अपितु व्यक्तिगत होते हैं। उदाहरणार्थ स्वप्न में 'सीढ़ियों पर चढ़ना' जुंग के अनुसार किसी के लिए सफलता प्राप्त करने का प्रतीक है, तो किसी के लिए महत्वाकांक्षी होने का, लेकिन फ्रायड के अनुसार यह सब के लिए 'रतिक्रिया' का प्रतीक है।

जुंग ने स्वप्नों में "पश्चात-विस्तारण (Secondary elaboration) के महत्व पर भी प्रकाश डाला है। इनके अनुसार पश्चात विस्तारण स्वप्न का अंश नहीं बल्कि जागने बाद स्वप्न निरीक्षण की उपज है। इस प्रक्रिया द्वारा स्वप्न की विश्रृंखलित या असंबद्ध कड़ियों को परस्पर संबद्ध और शृंखलित किया जाता है। ऐसा करने से स्वप्न तर्कसंगत और सार्थक हो जाता है। जुंग की उपर्युक्त सिद्धांत को उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'मॉडर्न मैन इन द सर्च ऑफ सोल' में उद्धृत निम्नलिखित उदाहरण से अच्छी तरह समझा जा सकता है।

उदाहरण - ज्यूरिख विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जुंग के समीपी मित्र थे। वे जुंग के स्वप्न-संबंधी विचारों का मजाक उड़ाया करते थे। एक बार उन्होंने जुंग से अपने एक स्वप्न की चर्चा की - "मैंने स्वप्न में देखा कि मैं एक ऊँचे पहाड़ पर सीधी चट्टानों से होते हुए चढ़ता जा रहा हूँ। यह मुझे अनोखा, लेकिन आनंददायक लगा और मैं आकाश को छूने की कल्पना करने लगा। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैं आकाश के काफी निकट हूँ और इतने में मेरी नींद खुल गई"। जुंग के प्रोफेसर मित्र पहाड़ की सैर करने के शौकीन थे। जुंग अपने मित्र के स्वप्न-वृत्तांत को सुनने के बाद चेतावनी दी कि वे कभी बिना गाइड लिए अकेले पहाड़ की सैर करने न जाएं। प्रोफेसर मित्र ने जुंग की इस चेतावनी को हल्के से लिया और उसका मजाक उड़ाया। लगभग दो महीने बाद एक बार वह पहाड़ की सैर करते समय एक चट्टान से फिसल जाने से गिर गए। संयोगवश उस समय वहाँ कुछ सैनिक मौजूद थे, जिनकी सहायता से वे बच गये। इस घटना के बावजूद प्रोफेसर साहब यदा-कदा पहाड़ की सैर करने निकल पड़ते थे।